

कल शाम से ही वह परेशान था। रेहाना लौटकर आई नहीं थी, हार्दिक भी उसके साथ ही था। रात भर फोन लगाता रहा, लेकिन रेहाना से बात ही नहीं हो पाई। आज की उसकी परेशानी, जिम्मेदारियों से परे कुछ अलग तरह की थी। वह समझ नहीं पा रहा था कि इसकी वजह क्या है ? इस तरह क्यों है वह परेशान ? ऐसा पहले तो कभी हुआ नहीं। रेहाना राजपूत से उसकी मुलाकात, पता नहीं कब हुई थी ? उसे ठीक से याद तो नहीं। दरअसल, रेहाना से अभिलाष की नहीं, अभिलाष के बचपन के दोस्त कमलेश चक्रधर की मुलाकात हुई थी। कमलेश और रेहाना, रेलवे स्टॉफ कॉलेज, वडोदरा में साथ-साथ थे। रेहाना, मेडिकल के लिए तो कमलेश, इंजीनियरिंग की किसी ट्रेनिंग के लिए वहाँ आये थे। एक दिन कॉलेज की कैटीन में रेहाना और कमलेश की बहस हो गई। मुद्दा था - भौतिकी और जीव विज्ञान में कौन बड़ा है ? दोनों अपने-अपने पेशे के चुनाव को सही साबित करने की कोशिश कर रहे थे। ये साबित तो नहीं हो पाया, लेकिन एक बात पक्की हो गई, कि दोनों अपने-अपने पेशे के प्रति बेहद ईमानदार हैं। वे जानते हैं कि वे यहाँ क्यों आये हैं ? बस यहीं मुश्किल हो गई। रेहाना को कमलेश, तो कमलेश को रेहाना पसंद आ गये। दोनों ने शादी कर ली। धर्म अलग थे, लेकिन कोई हंगामा नहीं हुआ। बड़े आराम से घरवालों की मर्जी से ही हुई शादी। कल रात रेहाना के साथ गया हार्दिक, जो रेहाना और कमलेश की इकलौती संतान है, बड़ा प्यारा बच्चा है।

देखने में, रेलवे केवल पटरियों पर चलती दिखती है, लेकिन पूरा मामला है बहुत पेचीदा। सिविल इंजीनियर, कमलेश की ज़रूरत हमेशा ही पटरियों पर या रेलवे की दूसरी कंस्ट्रक्शन साइट पर होती है। उसका पूरा दिन जैसे रेलवे के टाश्म-टेबल की तरह निश्चित है। उसके समय की इसी पाबंदी के चलते अभिलाष और उसकी दोस्ती हुई थी। स्कूल की फुटबॉल टीम में दोनों साथ थे। कमलेश की टाईमिंग गज़ब की थी। क्या बेजोड़ पास देता था ? कमलेश के पास बॉल आती, तो एकदम खास मौके पर बॉल अभिलाष को पास कर देता। अभिलाष एक किक भर मारता और बॉल गोल-पोस्ट के भीतर। कमलेश ने कभी भी अपने किक से गोल करने की ज़िद नहीं की। वह चाहता तो कर सकता था, लेकिन उसकी दलील थी कि - 'खेल हमेशा, टीम और टाईमिंग का होता है।' अपने इसी रवैये की वजह से वह रेलवे के बेहद समझदार इंजीनियरों में से था। हर विभाग उसे अपने यहाँ चाहता था। कंस्ट्रक्शन की बात जब भी होती, कमलेश के बारे में पूछा जाता। अगर वह खाली होता, तो निश्चित ही उसकी ज़रूरत पड़ती। पर खाली होता तब तो। इतनी मांग थी उसकी रेलवे में, कि वह कभी खाली ही नहीं होता। अभिलाष सोच रहा था कमलेश के बारे में, और रेहाना के बारे में भी। रेहाना की अभी तक कोई खबर नहीं थी। अभिलाष परेशान था- 'अरे, अगर नहीं आ रही घर, तो फोन तो करना चाहिये ना, पता नहीं कहाँ है ? जो फोन भी नॉट रीचेबल है।'।

अभिलाष की परेशानी अब गुस्से में बदल रही थी। वह चिढ़ रहा था - 'आयेगी तो पूछता हूँ, ये कोई तरीका है ?' फिर उसके मन में विचार आया - 'कहीं ऐसा तो नहीं कि कहीं कुछ अनहोनी ? ना, ना, ऐसा नहीं होगा, फोन में कुछ गड़बड़ी हो गई होगी।' - अभिलाष ने फौरन खुद को समझाया। लेकिन उसे वह किस हैसियत से डाँटेगा, क्यों डाँटेगा ? यह विचार आते ही अभिलाष सोच में पड़ गया। एक हल्की स्मित मुस्कान उसके



गलत नहीं था वह...!

चेहरे पर दौड़ गई, वह खुद से शरमा भी गया। वह इस विचार में खोया ही था कि फोन की घंटी बज गई...। अभिलाष ने फोन उठाया कि दूसरी तरफ से रेहाना की आवाज़ सुनाई दी - 'हैलो!' - ये सुनना था कि अभिलाष फट पड़ा। तीन मिनट तक, पता नहीं गुस्से में क्या-क्या बोलता रहा और उधर रेहाना चुपचाप सुनती रही। जब वह शांत हुआ तो रेहाना ने हौले से पूछा - 'हो गया?, गुस्सा शांत हुआ?' उसकी आवाज़ से पता चल रहा था कि वह दूसरी तरफ मुस्कुरा रही है। अभिलाष को भी अपने गुस्से पर हँसी आ गई। वह हँसते हुए बोला - 'और नहीं तो क्या। पर हो कहाँ तुम?' 'आ रही हूँ एक घंटे में, तो बताती हूँ। आज, मुझे अस्पताल नहीं जाना है। तुम भी बोल दो अपने दफ्तर में कि नहीं आ रहे।' - रेहाना ने आदेश और अनुरोध के मिले-जुले भाव में कहा। अभिलाष समझ नहीं पाया कि ऐसी क्या बात है... जिसके लिए रेहाना ने अस्पताल जाने से मना कर दिया। वह तो अपने मरीजों के बीच ही बहुत खुश दिखती है। फिर भी उसने अपना फोन उठाया और मेसेज भेज दिया, बस तीन शब्द - 'नॉट कॉमिंग टुडे'। इसी उल-पोह में उसने घर की तरफ देखा। तीन कमरे का फ्लैट, जैसे कबाड़खाना था। कुछ भी अपनी जगह नहीं। रेहाना की फिफ्ट में उसने घर की तरफ ध्यान ही नहीं दिया। रात के बर्तन वैसे ही सिंक में पड़े थे। किचन, बेडरूम, सोफा सब एकदम कबाड़ की दुकान लग रहे थे। 'कबाड़वाला भी अपना कबाड़, इससे बढ़िया से सजा-सम्भालकर रखता है। अभी रेहाना को आने में एक घंटा है।' - ये सोचकर अभिलाष जुट गया। करीब तीस मिनट बाद उसने कमर सीधी की और पूरे घर को एक नज़र देखा- 'वाह ! क्या बात है ?' उसने सोचा। उसे लग ही नहीं रहा था कि ये वही घर है, जहाँ वह आधा घंटा पहले बैठा था। रेहाना के आने से पहले वह तैयार भी हो जाना चाहता था... सो बाथरूम में घुस गया। लेकिन बाथरूम में घड़ी तो होती नहीं, सो जब वह तौलिये से बाल पोंछ ही रहा था कि कॉलबेल बज गयी। उसने जल्दी से कमर में तौलिया लपेटा और दौड़कर दरवाज़े की तरफ लपका। दरवाज़े की कुंडी खोल वह कपड़े पहनने चला गया। अपने कमरे से बाहर निकला, तो वह एकदम रिन की चमकार लग रहा था। झक झक सफेद कुर्ता पाजामा। बस एक घंटा पहले जो अभिलाष था, वह एकदम दूसरा था। वह परेशान, बदहाल और ये तरोताज़ा, ऊर्जावान। पर क्यों ? उसने दरवाज़े की तरफ देखा, कोई भीतर तो आया नहीं था। सो उसने जाकर दरवाज़ा भीतर खींच लिया। बाहर रेहाना खड़ी थी। देखते ही

अभिलाष बोला - 'अरे खुला ही तो था... तुमने घंटी बजाई तो मैंने कुंडी खोल दी थी।' 'अच्छा...और मैं दरवाज़ा खुलने का इंतज़ार कर रही थी। सोचा कि बाथरूम में होंगे।' - रेहाना ने मजाक में कहा। रेहाना के पीछे हार्दिक खड़ा था... वह सामने आ गया... मुस्कुराता हुआ...। मुस्काते हार्दिक को देख अभिलाष हमेशा ही गड़बड़ा जाता है। इतनी खुशी होती है कि सम्भाल नहीं पाता... आँखें न केवल भर आतीं, बल्कि छलक आतीं... ज़ार-ज़ार आँसुओं से रो उठता है वह। सामने हार्दिक था... जिसके लिए वह कल रात से परेशान था। उसे खुश देख, मुस्कुराता देख आज भी अभिलाष की वही दशा हुई, जैसी हमेशा होती है। तीन साल के हार्दिक के सामने अभिलाष हमेशा ही अपने घुटनों पर होता है। इस वक़्त भी वह अपने घुटनों पर आ गया। उसकी आँखें छलछलातीं लेकिन इससे पहले ही हार्दिक दौड़कर उसके गले लग चुका था। अभिलाष ने आँखें बंद कर लीं। आँखें रेहाना की भी डबडबा गई थीं। उसने एक लम्बी साँस ली कि उसके चेहरे पर एक मुस्कान फैल गई। अभिलाष और हार्दिक के मिलन पर अक्सर उसकी दशा ऐसी ही होती थी। अभिलाष ने आँखें खोलीं। उसके गले से हार्दिक लगा था, लेकिन सामने दरवाज़े पर रेहाना के पीछे से एक बच्ची झाँकती दिख रही थी। रेहाना ने उसे अपने पीछे से आगे किया। दो-ढाई साल की छोटी सी प्यारी बच्ची। थोड़ी देर लगी... पर अभिलाष ने उसे पहचान लिया। तनाव उसके चेहरे पर आया और उसने रेहाना की तरफ देखा...।

रेहाना ने सिर हिलाया - 'हाँ, वही है।' कहते हुए वह अपने कमरे की तरफ बढ़ गई। 'पहले, ज़रा इन्हें खिला-पिला लूँ कुछ, फिर बात करते हैं।' अभिलाष ने जैसे उसकी बात सुनी ही नहीं। वह हैरान सा उस छोटी सी बच्ची को रेहाना का हाथ थामे जाते हुए देखता रहा। किचन के दरवाज़े के पास पहुँच कर एक बार उस बच्ची ने पलट कर अभिलाष की ओर देखा। एकदम साफ और निर्दोष मुस्कान थी उसके होठों पर। 'वही है' - रेहाना के शब्द अभिलाष के कानों में फिर गूँज गये।

कहाँ ज्यादा दिन हुए हैं ? वक़्त बीतते देर तो लगती नहीं। वापी और वलसाड के बीच काम चल रहा था। पटरियों के नीचे के पुराने स्लीपर्स बदले जाने थे। यहाँ नमी ज्यादा थी और मिट्टी नरम। सो पटरियों को टिकाने में मुश्किल आ रही थी। कमलेश को इसी मुश्किल को हल करने बुलाया गया था। पटरियों के किनारे सीमेंट के स्लीपर्स रखे थे। एक के ऊपर एक। देखने से तो ये सफेद स्लीपर्स इतने कमजोर लगते हैं कि भरोसा ही नहीं होता कि कैसे ये टनों भारी रेलगाड़ियों का वजन उठा लेते होंगे ? लेकिन अगर किसी को एक स्लीपर उठाना पड़े तो समझ आती है उसकी मजबूती। एक-एक स्लीपर को उठाने के लिए कम से कम 10 लोग चाहिये, तब जाकर हिलता है वह। दिन-रात काम चल रहा था। कुछ मजदूरों ने अपने परिवार समेत वहीं डेरा डाल दिया था। बगल में किसी पैसेंजर गाड़ी का पुराना डिब्बा पड़ा था। कुछ उसमें आ बसे थे, तो कुछ ने उसी डिब्बे के साथ लगकर टेंट लगा दिये थे। वहाँ झुगियाँ नहीं थी, बल्कि टेंट थे, जैसे सेना की कैम्पों में होते हैं।

उस दिन कमलेश, पटरियों के नीचे की ज़मीन देख रहा था। पास के टेंट से एक बच्ची, पता नहीं कैसे ? स्लीपर्स के उस टॉवर के पास आ गई। किसी ने ध्यान नहीं दिया था, लेकिन एक के ऊपर एक होने से नीचे के स्लीपर्स मिट्टी में धँस गये थे और टॉवर झुक गया था। ये कोई नई बात नहीं थी। काम की साइट पर तो ऐसा होता रहता है। लेकिन जो नहीं होता है, वह होने

वाला था। कमलेश ने टॉवर का झुकाव नोटिस किया था। लेकिन अचानक वह चीख पड़ा। वह बच्ची टॉवर के पास आ गई थी, ठीक उसके नीचे। कमलेश दौड़ा। एकदम जैसे संयोग ही था। बच्ची नीचे आई कि टॉवर के स्लीपर्स सरकने लगे। वे बच्ची के ऊपर ही गिरते, लेकिन तब तक कमलेश दौड़ चुका था। एकदम सही वक़्त पर सही जगह, यही तो उसकी खासियत थी। आखिर इंजीनियर था। बच्ची, टॉरों भारी स्लीपर के नीचे आती कि कमलेश ने बच्ची को उठाया और दूर गीली मिट्टी की तरफ फेंक दिया। बच्ची एकबारगी इस अचानक बदलाव से चौंक गई और रोने लगी। ज़ोर का हल्ला हुआ। सारे मजदूर और अधिकारी चीख उठे। बच्ची पर गिरने वाला स्लीपर कमलेश की पीठ पर आ गिरा था। सब दौड़े, तब तक एक के बाद एक कई स्लीपर्स फिसल कर कमलेश के उपर आ गए थे। कमलेश उन स्लीपर्स के नीचे दब रहा था। उस दिन अभिलाष वहीं था। वह कमलेश के साथ ही दौड़ा था। कमलेश ने जब बच्ची को फेंका था, तो अभिलाष दौड़ कर बच्ची की तरफ लपका। उसने बच्ची को गोद में उठा लिया कि कहीं उसे चोट तो नहीं लगी? वह बच्ची को चुप कराने लगा। इस बीच कमलेश कब स्लीपर्स के नीचे दब गया, उसे खबर ही नहीं लगी।

पाँच सेकेंड की ही बात होगी, जब वह कमलेश की तरफ मुड़ा तो कमलेश उसे ही देख रहा था। भारी दबाव से हो रही तकलीफ उसके चेहरे पर थी। अचानक उसके मुँह से खून निकल आया। पूरा चेहरा, आँखें, नाक, सबसे जैसे खून की नाली बह गई। सारे लोग सफाई से स्लीपर्स हटाने में लगे थे कि कमलेश को और ज्यादा नुकसान ना हो। अभिलाष कमलेश के बिल्कुल पास था। कमलेश ने खून भर आई आँखों से अभिलाष को देखा और उसकी आँखें बंद हो गईं। अभिलाष की आँखें भर आई थीं, बेबसी या किसी आशंका से या क्या था... कहीं पता चलता है ऐसी बातों का? वह बच्ची की तरफ मुड़ा, तो बच्ची अपनी माँ की गोद में थी और मुस्कुरा रही थी। अभिलाष समझ नहीं पाया कि वह हँसे या रोये? इस सबमें मुश्किल से तीस-चालीस सेकेंड लगे होंगे, लेकिन लगा जैसे पूरी ज़िंदगी बीत गई थी।

आज रेहाना के साथ वही बच्ची थी। पिछले एक साल से रेहाना और अभिलाष उस बच्ची और उसके माँ-बाप को कोस रहे थे। वही क्या, रेलवे में जो भी कमलेश और इस हादसे के बारे में जानता था, उस बच्ची और उसके माँ-बाप को कोसे बिना नहीं रहता। क्यों छोड़ा उन लोगों ने अपनी बच्ची को, जिसे बचाने में कमलेश जैसे व्यक्ति (व्यक्ति के तौर पर भी और एक हुनर के तौर पर भी) की क्षति हुई। रेलवे ने एक नोटिस जारी की थी कि कोई भी व्यक्ति काम की साइट के आस-पास अपना डेरा नहीं बनायेगा।

जीवन का ये नुकसान कभी भी नहीं भरने वाला था। ये बात रेहाना से बेहतर और कोई नहीं समझ सकता था और उस नुकसान की वजह जो थी, उसी बच्ची को रेहाना के साथ देखकर अभिलाष हैरान था। ये क्या है आखिर? क्यों है? ऐसा कैसे हो सकता है? अब जवाब तो रेहाना ही देती।

इस बच्ची की वजह से कितना बड़ा नुकसान हुआ है? न केवल रेहाना का बल्कि पूरी रेलवे का। एक छोटी सी बच्ची की वजह से रेलवे ने एक बेहद काबिल इंजीनियर खो दिया। कमलेश जैसी काबिलियत बिरले ही मिलती है। ऐसा बुद्धिमान और सच में ज़हीन इंसान, नामुमकिन है कि दोबारा मिले। रेलवे के हर विभाग के लोग कमलेश के नुकसान को कभी ना भरने वाली क्षति मानते थे। इंजीनियर तो हज़ारों आये और आगे भी

आयेंगे, लेकिन कमलेश जैसी काबिलियत, पहले तो नहीं ही थी, आगे भी शायद ही मिलेगी। ऐसा हुनर, ऐसी काबिलियत, एक छोटी सी बच्ची को बचाने के लिए खत्म हो गई, ये अनर्थ ही तो था। कमलेश के सहकर्मी और उस हादसे के वक़्त जो लोग मौजूद थे, वे तो यहाँ तक कहते थे कि - 'मजदूर की बच्ची के बदले कमलेश की जान चली गई। कमलेश ने ये मूर्खता क्यों की? अपने जैसे काबिल इंसान को एक फालतू बच्ची की जान बचाने के लिए बर्बाद कर दिया। ये बेवकूफी नहीं तो और क्या थी?' बच्ची एक मजदूर की संतान थी। बहुत होता तो वह भी एक मजदूर ही बन जाती। लेकिन उसकी जान के बदले कमलेश जैसे बेजोड़ इंजीनियर का नुकसान तो एकदम मूर्खता हो गई। सब हैरान थे कि कमलेश ने ऐसा क्यों किया?

अब कमलेश होता, तभी तो इस सवाल का जवाब मिलता। लेकिन अभी-अभी रेहाना ने जो किया है, उसका जवाब तो रेहाना दे ही सकती है। अभिलाष यह सोच ही रहा था कि रेहाना आ गई। बच्चे दूसरे कमरे में टीवी देखते हुए कुछ खा रहे थे। रेहाना को देखते ही अभिलाष ने बस एक ही शब्द पृछा- एकदम छोटा सा - 'क्यों?' रेहाना जैसे इस सवाल के लिए

मुझसे अब और नफरत नहीं होती। मैं डॉक्टर हूँ। डॉक्टर अगर नफरत करेगा, तो इलाज कैसे करेगा? लेकिन हो ऐसा ही रहा है। पिछले एक साल से मैं बच्चों का इलाज नहीं कर रही। ये कमलेश के खिलाफ दगा होगा ना?

तैयार बैठी थी। उसने छूटने ही बोलना शुरू किया- 'हां, पिछले एक साल से यह सवाल मुझे भी परेशान किये हुए है कि - कमलेश ही क्यों, यह बच्ची क्यों नहीं? एक साल से इस गरीब बच्ची के लिए और इसकी तरह हर बच्ची के लिए, मन में नफरत भरे-भरे तंग आ गई हूँ मैं। लेकिन जवाब नहीं मिला कि कमलेश ही क्यों, यह बच्ची क्यों नहीं? देखो! ये चुनाव तो कमलेश का था ना। वह चाहता तो नहीं भी दौड़ता, वहीं खड़ा रहता और इस बच्ची को आने देता स्लीपर्स के नीचे। कमलेश ने ऐसा नहीं किया, क्यों? तुम्हारे 'क्यों?' का जवाब भी मेरे इसी 'क्यों' में है। अभिलाष, रेहाना को ही देख रहा था। रेहाना बोले ही जा रही थी। कमलेश ने अपनी जान की परवाह नहीं की, इस बच्ची की जान की फिक्र की, क्योंकि उसे लगा कि यह बच्ची उससे ज्यादा ज़रूरी और कीमती है। उसने जिस बच्चे को अपनी जान देकर बचाया और हम पिछले एक साल से उस बच्चे से नफरत कर रहे हैं, उसे हिकारत से देख रहे हैं। वह कहते हैं ना कि आशीर्वाद में कि तुम्हें मेरी भी उमर लग जाये! कमलेश ने तो इस बच्ची को यह आशीर्वाद सचमुच में दे दिया। उसने अपनी उमर का केवल आशीर्वाद ही नहीं, अपनी उमर ही दे दी। पिछले छह महीने से साथ रहते-रहते अभिलाष को कभी अंदाज़ा ही नहीं हुआ कि रेहाना इतना कुछ सोच रही थी। इतना परेशान थी। वह तो समझता था कि रेहाना बस कमलेश को भूल नहीं पा रही है। कोई कैसे भूल सकता है कमलेश जैसा

को? वह खुद भी तो कहीं भूल पा रहा है? वह रेहाना का बोलना सुनता रहा - 'यह बच्ची तो उसी दिन मर जाती, लेकिन इसे कमलेश की उम्र ने बचा लिया। यह उम्र जो तुम देख रहे हो ना, वह कमलेश की ही दी हुई उम्र है। उसी की उम्र से यह बच्ची जी रही है और हम, देखो! इससे कितनी नफरत करते रहे?'

पता है, मैंने अस्पताल में छोटे गरीब बच्चों को देखना बंद कर दिया था। इतनी नफरत थी मुझे इससे, और इसकी तरह के सारे बच्चों से। पिछले एक साल से मैं परेशान हूँ। हर व्यक्ति की तरह मैं भी कमलेश की मौत का ज़िम्मेदार इसे मानती रही। लेकिन बात तो उल्टी है। दरअसल, कमलेश की मौत के लिए यह बच्ची नहीं, बल्कि इसकी ज़िंदगी के लिए कमलेश ज़िम्मेदार है। मुझसे अब और नफरत नहीं होती। मैं डॉक्टर हूँ। डॉक्टर अगर नफरत करेगा, तो इलाज कैसे करेगा? लेकिन हो ऐसा ही रहा है। पिछले एक साल से मैं बच्चों का इलाज नहीं कर रही। यह तो कमलेश के खिलाफ दगा होगा ना? उसने जिस बच्ची को अपने हिस्से की ज़िंदगी दे दी, हम उसी बच्ची को, कमलेश के खिलाफ देख रहे हैं। इतना ही नहीं हम इसके बचाने को कमलेश की मूर्खता मान रहे हैं। अब यह मूर्खता है या नहीं इसे साबित करने के लिए कमलेश तो है नहीं। पर मैं तो हूँ ना...! बच्चों को देखकर मेरे मन में प्यार आना बंद हो गया था। लेकिन पिछले एक हफ्ते से मैं रोज़ाना इस बच्ची के घर जाकर इसे देख रही हूँ। जानते हो अभिलाष? इसे कमलेश ने केवल अपनी ज़िंदगी ही नहीं दी। उसने अपना हुनर भी इसे दे दिया है। सात दिनों से देख रही हूँ कि यह लड़की बहुत होनहार है। अब समझ आया कि कमलेश ने इसकी जान क्यों बचाई? इसे अपने हिस्से की उम्र क्यों दी? कमलेश ने इसे बचा कर मूर्खता नहीं की। वह मूर्ख नहीं था कि एक मामूली बच्ची के लिए अपनी जान की बलि चढ़ा दी। यह बच्ची सचमुच में कुछ तो है और मैं यह साबित करूंगी कि कमलेश... मेरा कमलेश... मूर्ख नहीं था। वह ज़हीन था... उसके फैसले कभी गलत नहीं होते थे।' अभिलाष एकदम सन्न सा सब कुछ सुनता रहा। रेहाना की बातें उसे परीलोक की तरह लग रही थी। कोई इतना विस्तार से सोचते हुए कैसे ज़िंदा रह सकता है? कोई अपनों और दूसरों के व्यवहारों को इतनी गहराई से कैसे समझ सकता है? हाँ, समझ सकता है। सामने ही तो खड़ा है ऐसा व्यक्ति, तभी तो रेहाना बेहतरीन डॉक्टर है, जैसे कमलेश बेहतरीन इंजीनियर था। 'हां, रेहाना ठीक ही तो बोल रही थी।' अभिलाष ने सोचा, लेकिन उसने पृछा... 'आगे क्या?' रेहाना ने जवाब दिया - 'आगे क्या? यह बच्ची यहीं रहेगी हमारे साथ। कमला नाम है इसका। हम इसे गोद ले रहे हैं।' अभिलाष चौंक गया - 'हम! हम से क्या मतलब? रेहाना ने अनमने से कहा - 'हम, यानी मैं और तुम!'- अभिलाष दोबारा चौंक गया - 'मैं!' रेहाना ने ज़ोर से कहा - 'हाँ तुम! मैं अकेले इन दो बच्चों को कैसे पालूंगी? इन्हें पिता भी तो चाहिये ना। पिछले छह महीने से मैं तुम्हें देख रही हूँ। तुम बोल नहीं रहे, तो मैं ही सवाल करती हूँ। एक सवाल है एक तुमसे। क्या तुम मुझसे शादी करोगे, पिता बनोगे इन बच्चों के?' अभिलाष हैरान था। उसकी आँखों में आँसू थे। उसने खुशी में केवल हामी भर दी। अब वह समझ गया था कि रेहाना के नहीं रहने पर वह परेशान क्यों था और छोटे से हार्दिक की मुस्कान उसे भावुक क्यों कर देती थी? रेहाना के सवाल में ही, उसके अपने सवाल का जवाब था।

 **आनंद के. कृष्णा**, सैपर्स एडवर्टाईजिंग, मुंबई